National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 249-252
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. राजदेव मिश्र
PGT (हिन्दी),
उर्मि विद्यालय, (CBSE),
समा, वडोदरा

Correspondence:
डॉ. राजदेव मिश्र
PGT (हिन्दी),
उर्मि विद्यालय, (CBSE),
समा, वडोदरा

महाकवि भास के नाटकों का नाट्य वैशिष्ट्य

डॉ. राजदेव मिश्र

सारांश: साहित्य-दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने काव्य के दो प्रकार माने हैं- दृश्य और श्रव्य। दोनों ही आंगिक विधा है, फिर भी श्रव्य काव्य का उपयोग श्रवणेन्द्रिय के माध्यम से किया जाता है, अत: यह श्रुति सापेक्ष्य होने से पाठ्य होता है । जबकि दृश्य चक्षु-इंद्रिय का विषय होने के कारण देखने की वस्तु है; वैसे इसमे सुनने का भी सहयोग अपेक्षित है परंतु मुख्य चक्षु ही है और उसी दृश्य काव्य को नाटक कहा जाता है। साहित्य में दशरूपक की चर्चा की गई है जिसमें से नाटक उसका एक भेद है। नाटक के लिए नाटक, नाट्य, रूप और रूपक आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नाट्य शब्द की व्युत्पत्ति और अर्थ को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद है, लेकिन लोग नाटक शब्द पाणिनि के 'नट्' धातु से मानते हैं।[1]

नाटकों में वैशिष्ट्य: परिभाषा आदि के उपरांत काव्य शास्त्रियों और नाट्य-शास्त्रियों ने नाटक के कुछ ऐसे वैशिष्ट्य बतलाएँ हैं जो वस्तुत: भास के नाटक चक्र में पढ़े या देखे जा सकते हैं, उन विशेषताओं में कथानक-वैशिष्ट्य, पात्र-वैशिष्ट्य, घटना- वैशिष्ट्य, भाषा-वैशिष्ट्य, संवाद- वैशिष्ट्य विशेष रूप से पठ्य है। भास के नाटकों को यदि क्रमबद्ध रूप से पढ़ा जाए, तो पूर्ववर्ती नाटकों की अपेक्षा उत्तरवर्ती नाटकों में कथानक-निर्माण, पात्र-चित्रण, संवाद-योजना, रस-निष्पत्ति तथा रंगमंचीय कौशल आदि सभी नाट्यतत्त्व उत्तरोत्तर निखरते हुए दिखाई देते हैं

अत: भास को इन्हीं कारणों से और विशिष्टता के कारण कालिदास से लेकर विश्वनाथ पर्यन्त सभी ने समादृत करते हुये अपने ग्रन्थों में यथोचित स्थान पर उद्धृत किया है।

संस्कृत साहित्य में महाकवि भास का स्थान : संस्कृत साहित्य के इतिहास में व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, बाण, भवभूति आदि अमर रत्न माने जाते हैं। इन सभी कवियों की रचनाएँ व्यापक रूप से पूजी जाती रही हैं। किंतु भास, जो महाकवि माने जाते हैं, उनका वास्तविक साहित्य लुप्तप्राय था और उनका नाम मात्र रह गया था। लगभग 1900 वर्ष तक भास का अस्तित्व केवल नाम तक सीमित था। उनके ग्रंथ, उनकी सेवाएँ—ये सब हम अन्य कवियों की रचनाओं से ही अनुमान लगाते थे। किन्तु यह स्पष्ट है कि अनेक प्रसिद्ध कवियों ने भास का उल्लेख आदरपूर्वक किया है:

कालिदास ने 'मालविकाग्निमित्र' में कहा है- **"प्रथितयशसां भाससौमिल्लकविपुत्रादीनामिति।"** [2]

बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' की भूमिका में लिखा है –

"सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः।
सपताकैर्यशो लेमे भासो देवकुलैरिव॥"

राजशेखर ने कहा है -

"भासनाटकचक्रेऽपिच्छेकैः क्षिप्ते परीक्षितुं
स्वप्नवासवदत्तस्योद्गारकोऽभून् पावकः।"

जयदेव ने भास, कालिदास, बाण आदि की तुलना इस प्रकार की है -

"भासो हासः कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः।
हर्षो हर्षः हृदयवसतिः पञ्चबाणस्तु बाणः॥"

भास के नाटक: सन् 1912 में, त्रिवेन्द्रम (आज का तिरुवनंतपुरम) के समीप पद्मनाभपुर के पास मणलिकर मठ से प्राप्त एक हस्तलिखित ग्रंथ (करीब 300 वर्ष पुराना) में भास के **13** नाटकों की प्रतियाँ मिलीं। यह पांडुलिपि मलायलम लिपि में थी और महामाहोपाध्याय टी. गणपतिशास्त्री ने इसे महाकवि भास कृत माना, जो इस प्रकार हैं-

1-स्वप्नवासवदत्तम् 2-प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् 3-पञ्चरात्रम् 4-चारुदत्तम् 5-दूतघटोत्कचम् 6-दूतवाक्यम् 7-अविमारकम् 8-बालचरितम् 9-मध्यमव्यायोगः 10-कर्णभारम् 11-ऊरुभङ्गम् 12- अभिषेकनाटकम् 13- प्रतिमानाटकम्

इन सभी नाटकों का प्रकाशन टी. गणपतिशास्त्री ने प्रस्तावना सहित किया। उन्होंने अपने गहन परीक्षण और आंतरिक व बाह्य प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध किया कि ये वही नाटक वे हैं जिनका उल्लेख कालिदास, बाण और अन्य कवियों ने किया था। इस खोज को साहित्यजगत में भारी महत्व मिला।

भास के इन नाटकों के प्रकाशन के बाद विद्वतजगत में विवाद खड़ा हुआ। कुछ विद्वानों ने यह कहा कि ये नाटक भास द्वारा नहीं, बल्कि केरल के चाकियार कलाकारों द्वारा मंचन के लिए रचे गए थे। दूसरी तरफ टी. गणपतिशास्त्री के समर्थक विद्वानों ने प्रमाणों के आधार पर यह दृढ़ता से स्थापित किया कि ये नाटक प्राचीन काल के महान संस्कृत नाटककार भास के ही हैं।

भास की विशेषता: "भासो हासः" यह कथन यह दर्शाता है कि भास के नाटकों में जीवन का उल्लास**,** सजीवता**,** मनोवैज्ञानिक गहराई**,** और कलात्मकता अद्वितीय ढंग से अभिव्यक्त होती है। उनके पात्र केवल अभिनय योग्य नहीं, बल्कि सोचने योग्य भी हैं।

महाकवि भास के बारे लोगों का अलग-अलग मत दृष्टव्य होता है जिनमें से कुछ लोग यह मानते हैं कि भास नाम का कोई और लेखक था, जिसने ये नाटक लिखे। परन्तु यह मत स्वीकार्य नहीं है। भास द्वारा लिखित इन नाटकों के अध्ययन से कुछ विशेष लक्षण प्राप्त होते हैं, जो विशिष्ट शास्त्रीय नियमों के अनुसार हैं। इन प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि इन सभी नाटकों के रचयिता भास ही रहे होंगे।

भास का समय – महाकवि-भास के समय को लेकर भी लोग एकमत नहीं दिखते हैं। गणपतिशास्त्री और हरप्रसाद शास्त्री जैसे विद्वान मानते हैं कि भास की समय चौथी से छठी शताब्दी के बीच रहा होगा । परन्तु रंगनाथ शास्त्री जैसे अन्य विद्वान भास को ग्यारहवीं शताब्दी का बताते हैं। इन सब मतभेदों के बावजूद आचार्य बलदेव उपाध्याय का विचार सर्वाधिक प्रतीत होता है, उनके अनुसार भास का समय ईसा के बाद चौथी या पाँचवीं शताब्दी है।[3]

भास के नाटकों का वर्गीकारण : डॉ. पुसालकर ने भास रचित नाटकों को पाँच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है,[4] जो इस प्रकार हैं-

1-महाभारत पर आधारित नाटक : 1-मध्यमव्यायोग 2-दूतवाक्यम् 3-दूतघटोत्कचम् 4-कर्णभारम् 5-ऊरुभंगम् 6- पञ्चरात्रम्

2-कृष्णकथा पर आधारित नाटक : 1-बालचरितम्

3-रामायण पर आधारित नाटक : 1-प्रतिमानाटकम् 2-अभिषेकनाटकम्

4-उदयन-कथा पर आधारित नाटक : 1-प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् 2-स्वप्नवासवदत्तम्

5-लोककथाओं पर आधारित नाटक : 1-चारुदत्तम् 2-अविमारकम्

भास की पात्रनिर्माण कला : भास न केवल एक महान नाटककार थे, बल्कि उन्होंने पात्रों की रचना में भी अद्भुत कौशल दिखाया है । जब हम उनके नाटकों को पढ़ते हैं या मंच पर देखते हैं, तब नाटक के मूल्यांकन हेतु निम्न बिंदु महत्त्वपूर्ण होते हैं – **1**-विषय-विकास **2**-पात्रों की रचना और **3**-रसों की प्रस्तुति । भास की तुलना में यदि हम अन्य आधुनिक नाट्यकृतियों को देखें, तो उनमें पात्र-निर्माण की दृष्टि से विशेष गहराई नहीं मिलती। डॉ. पुसाळकर के अनुसार, भास के नाटकों में स्त्री-पुरुष पात्रों की संख्या लगभग 200 सौ से भी अधिक हैं।[5] इतनी बड़ी संख्या में पात्रों की प्रस्तुति करना स्वयं में उनकी नाट्यकला का परिचायक है।

जब भी भास का नाम लिया जाता है, बाणभट्ट का 'हर्षचरित' स्मरण हो आता है, जिसमें लिखा है –

सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः ।
सपताकैर्यशो हेमे भासो देवकुलेरिव ॥[6]

अर्थात "सूत्रधार द्वारा आरंभ किए गए, बहुपात्रीय और उपकथाओं से युक्त जिन नाटकों के द्वारा भास ने यश प्राप्त किया, वे देवालयों की तरह पवित्र माने जाते हैं।"

भास के पात्रों की विविधता : भास के नाटकों में विविध प्रकार के पात्र मिलते हैं , यथा -

देवता, ऋषि, मनुष्य, पशु-पक्षी, राजकुमार, चोर, विदूषक, दासी और नाग, अप्सरा, यक्ष, मणिकर्णिका आदि पात्रों की इतनी सारी विविधता यह सिद्ध करती है कि भास ने अपनी नाट्य-कृतियों में केवल राजाओं-महाराजाओं और वीरों की कथाएँ ही नहीं लिखीं, बल्कि जीवन के हर वर्ग को अपनी लेखनी का विषय बनाया है ।

भास के नाटकों में पात्रों की विविधता

भास ने अपने नाटकों में जिन पात्रों का निर्माण किया गया है, वे विषयवस्तु और स्वरूप के अनुसार अत्यंत विविधता को समेटे हुए हैं। वे केवल राजाओं या देवताओं तक सीमित नहीं, बल्कि सामान्य जन, पशु-पक्षी, दासी, चोर, ब्राह्मण, ऋषि-महर्षि आदि सबको समेटे हुए हैं। उनके नाटकों के कुछ पात्रों की सूची इस प्रकार है -

(1) देवता : जैसे प्रतिमा नाटक में **राम** का पात्र। कर्णभार में **शमी वृक्ष** के रूप में देवता। अभिषेक नाटक में **अग्निदेव** का पात्र।

(2) विद्याधर आदि : जैसे अविमारक में **अंगूठी देने वाला विद्याधर**। अभिषेक के छठे अंक में **तीन विद्याचर** (आकाशवासी

(3) देवपत्नियाँ : जैसे अभिषेक में **सीता** का पात्र।

(4) राक्षस : जैसे अभिषेक में **विभीषण और रावण**। मध्यमव्यायोग में **घटोत्कच**

(5) राक्षसियाँ : जैसे मध्यमव्यायोग में **हिडिम्बा**।

(6) राजा : जैसे प्रतिमा में **दशरथ**। और स्वप्नवासवदत्ता में **वत्सराज उदयन**।

(7) रानियाँ : जैसे प्रतिमा में **कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी** और ऊरुभंग में **गान्धारी**।

(8) राजकुमारियाँ : जैसे अविमारक में **कुरुंगया**, जो **कुंतिभोज की पुत्री** है।

(9) राजकुमार : जैसे ऊरुभंग में **दुर्योधन के पुत्र दुर्जय** का पात्र।

(10) मंत्री : जैसे स्वप्नवासवदत्ता में **यौगंधरायण और रुमणवत**।

(11) विदूषक : जैसे स्वप्नवासवदत्ता में **वसंतक**।

(12) वीर : जैसे कर्णभार में **कर्ण और अंगराज**।

(13) ब्राह्मण : जैसे प्रतिज्ञायौगंधरायण में **बादरायण**।

(14) वानर ; जैसे अभिषेक में **अंगद, हनुमान और बालि**।

(15) धात्री : जैसे स्वप्नवासवदत्ता में **वसुन्धरा**।

(16) विद्यार्थी : जैसे स्वप्नवासवदत्ता में **ब्रह्मचारी पात्र**।

(17) पहलवान : जैसे बालचरित में **चाणूर और मुष्टिक**।

(18) चोर : जैसे चारुदत्त में **सज्जलक**।

(19) जुआरी : जैसे चारुदत्त में **संवाहक**।

(20) गणिका : जैसे चारुदत्त में **वसंतसेना**।

(21) नाग : जैसे बालचरित में **यमुना नदी में रहने वाला नाग – कालिय**।

(22) पशुपक्षी : जैसे बालचरित में **गरुड़**।

(23) मनुष्य : जैसे दूतवाक्य में **सुदर्शन चक्र** का मानवीकरण।

(24) ऋषिमुनि : जैसे बालचरित में **देवर्षि नारद**।

(25) देवमंदिर के सेवक : जैसे प्रतिमा नाटक में **देवगृह रक्षक**।

(26) चित्रकार : जैसे प्रतिमा नाटक के तीसरे अंक में **चित्रकार पात्र**।

भास के नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके नाटकों में इतनी बड़ी संख्या में पात्र होने पर भी हर पात्र का व्यक्तित्व स्पष्ट और विशिष्ट है। कोई भी पात्र मात्र भराव के लिए नहीं है उदाहरण के लिए - वसुन्धरा एक साधारण धात्री है लेकिन जब उसे वासवदत्ता का संदेश लेकर अंगारवती भेजती है, तब वह न केवल सच्चे प्रेम और निष्ठा से भरा हुआ कार्य करती है, बल्कि उसका संवाद भी अत्यंत भावपूर्ण होता है। और जब वासवदत्ता को पहचान मिलती है (प्रत्यभिज्ञान), तो वसुन्धरा का संवाद हृदयस्पर्शी बन जाता है

भास के पात्रों की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ : "अम्भो भट्ट दारिआ वासवदत्ता — यह वाक्य भास के पात्र वासवदत्ता की विशेषता और विकास को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उजागर करता है। इस प्रकार के सूक्ष्म शब्द प्रयोगों से उनके चरित्र के विकास की झलक मिलती है। वासवदत्ता के चरित्र में भावनात्मक दृढ़ता और निर्णयात्मक शक्ति स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।

जब वासवदत्ता को मरी हुई समझा जाता है और अचानक उसका पुनः प्रकट होना होता है, तो उसके वात्सल्य, कोमलता और गम्भीरता के भाव दर्शकों के मन को स्पर्श करते हैं। यह चरित्र मात्र सहायक पात्र नहीं है — इसमें संपूर्ण गहराई, नारीत्व, आत्मबल और संवेदनशीलता का चित्रण मिलता है।

- वत्सराज उदयन का चरित्र इस नाटक में प्रमुख है और उसके व्यक्तित्व को बेहद प्रभावी ढंग से उकेरा गया है।
- भास के पात्र-लेखन में मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता स्पष्ट देखी जा सकती है। वे पात्रों की केवल बाहरी क्रियाओं का नहीं, बल्कि उनके आंतरिक मानसिक आंदोलनों का भी चित्रण करते हैं।
- मीरवर्थ जैसे विद्वानों ने भी माना कि भास मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में अपने युग से आगे थे।
- जब घटोत्कच अपनी माँ हिडिम्बा के लिए आहार खोजने जाता है, तो वह एक ब्राह्मण परिवार को पकड़ता है।
- लेकिन उसे यह कष्ट होता है कि वह धर्म के विरुद्ध कार्य कर रहा है, फिर भी मातृ-आज्ञा के कारण वह मजबूर है। वह कहता है -

जानामि सर्वत्र सदा च नाम द्विजोत्तमा : पूजयतमाः पृथिव्याम् ।
अकार्यमेतश्च मयाऽद्य कार्यं मातुर्नियोगादपनीय शंकाम् ॥

अर्थात "मैं जानता हूँ कि द्विज (ब्राह्मण) पृथ्वी पर सबसे पूजनीय होते हैं। परंतु यह कार्य मुझे आज करना ही होगा – यह मेरी माँ का

आदेश है।" इससे उसका आंतरिक द्वंद्व और धर्म-संकट उजागर होता है।

भास की मौलिकता और स्वतंत्रता : महाभारत जैसे महाकाव्य में जहाँ पात्रों की सीमाएँ पहले से निर्धारित हैं, भास वहाँ भी नवीन रचनात्मक स्वतंत्रता दिखाते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत में दुर्योधन एक नकारात्मक पात्र है, लेकिन भास के ऊरुभंगम् नाटक में वह वीर, उच्च चरित्र वाला, और सहानुभूति योग्य पात्र बन जाता है। यह परिवर्तन एक प्रकार का सृजनात्मक विद्रोह है, ।

भास के नाटकों में विदूषक, हास्य और पात्र रचना की विशेषताएँ :

भास के नाटकों में विदूषक केवल एक हास्य पात्र नहीं है, बल्कि वह नायक का दूसरा हृदय और उसका सर्वाधिक सहायक मित्र होता है। यह कथन विशेष रूप से स्वप्नवासवदत्ता नाटक के विदूषक पात्र पर पूर्णतः चरितार्थ होता है।

भास ने विदूषक पात्र के माध्यम से हास्य का प्रयोग केवल मनोरंजन हेतु नहीं किया, बल्कि उसमें गंभीर साहित्यिक मूल्य और मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता समाहित की है। अतः उनके हास्य को भी विश्लेषण योग्य माना जाता है।

प्रसिद्ध कवि जयदेव ने भास को "हास" कहा है — यह हास्य उन्मादजनक नहीं, बल्कि मंद मंद स्मित उत्पन्न करने वाला होता है। उदाहरण के लिए -- स्वप्नवासवदत्ता के चौथे अंक में, जब विदूषक अजीर्ण (अपच) से पीड़ित होता है, तो वह कहता है –

"अधन्यस्य मम कोकिलानामक्षिपरिवर्ते इव कुक्षिपरिवर्तः संवृत्तः"

अर्थात (मेरे पेट में कोकिलों की तरह कुछ हिल रहा है) यहाँ "काक" (कौआ) के स्थान पर "कोकिल" (कोयल) शब्द का उपयोग एक सुसंस्कृत हास्य उत्पन्न करता है।

इसी प्रकार वह कहता है - "अस्ति नगरं ब्रहमदत्त नाम। तत्र किल राजा काम्पिल्यो नाम" चारुदत्त नाटक में विदूषक कहता है - "चोरं छित्त्वा सन्धिः प्रविष्टः" (चोर को पकड़कर अब मैं सन्धि में प्रवेश कर रहा हूँ)[7]

भास की मौलिक दृष्टि : भास अपने पात्रों को केवल परंपरागत स्रोतों से नहीं लेते, बल्कि वह उन कथाओं में रचनात्मक परिवर्तन (Modification) लाते हैं। इसी में उनकी मौलिकता प्रकट होती है। उनका यह बदलाव केवल कहानी बदलना नहीं है, बल्कि पात्रों के भीतर के मनोभावों और संघर्षों को नए रूप में प्रस्तुत करना है। जैसे - प्रतिमा नाटक में भरत अपनी माता कैकेयी को राम के वनवास के लिए दोषी ठहराता है। इस पर कैकेयी कहती है – अपरिहरणीयो महर्षिशाप: पुत्रविप्रवासं विना न भवति । --------- चतुर्दश दिवसा इति वक्तुकामया पर्याकुल हृदया चतुर्दश वर्षाणि त्युक्तम " ।[8] अर्थात "ऋषि के शाप को टालना असंभव था। ……. मैं 'चौदह दिन' कहना चाहती थी, लेकिन व्याकुल मन के कारण 'चौदह वर्ष' कह बैठी।"

इस 'जिह्वा-खलन' (भाषा की चूक) से कैकेयी की मानसिक अस्थिरता, पश्चात्ताप, और मातृत्व की करुणा स्पष्ट होती है। इस एक संवाद से उसका पूरा चरित्र सजीव और संवेदनशील बन जाता है।

भास के पात्र – भास के पात्र कृत्रिमता से रहित, सजीव, और आत्मीय दिखाई देते हैं। वे बहुत अधिक बोलते नहीं, किंतु कम शब्दों में भी अपने भावों को गहराई से प्रकट करते हैं। उनके सभी पात्र किसी न किसी उद्देश्य से उपस्थित होते हैं । डॉ. पुसालकर के अनुसार - भास के पात्र न तो कालिदास की तरह शृंगार प्रधान हैं, न पाणिनि या माघ की तरह कल्पनाप्रधान, न भवभूति की तरह गहराई में डूबे भावुक, न भट्टनारायण की तरह तेजस्वी, और न श्रीहर्ष की तरह कल्पना प्रधान । बल्कि भास के पात्र इस पृथ्वी के यथार्थ और सजीव पुत्र हैं। वे हाड़मांस के चरित्र- हैं नाटकीय — कम, वास्तविक अधिक।

अंततः हम कह सकते हैं कि भास की नाट्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है — सजीव पात्र-रचना, हास्य का सुरुचिपूर्ण उपयोग, और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण उनकी नाट्यदृष्टि में मौलिकता और सादगी दोनों ही संतुलित रूप से उपस्थित हैं। यही कारण है कि उनके पात्र आज भी पाठकों और दर्शकों के हृदय में स्थान पाते हैं । भास भारतीय नाट्य परंपरा के एक ऐसे स्तंभ हैं, जिनकी रचनाओं में न केवल रस और कला है, बल्कि गहन पात्र-चित्रण, विषयों की विविधता, और समाज के हर वर्ग की अभिव्यक्ति भी है। भास की शैली और गहराई उन्हें महाकवि की पदवी का अधिकारी बनाती है।

संदर्भ-सूची

1- ए हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर , मैकडानल , पेज- 346

2- मालविकाग्निमित्रम् – प्रस्तावना – 1/ 1-2)

3- महाकवि भास, एक अध्ययन (1964), पृ .155

4- Pusalkar A.D., *Bhāsa – A Study*, पृ .84, 200

5- Pusalkar A.D., *Bhāsa – A Study*, पृ .84, 200

6- हर्षचरित 1.25, चौखंभा प्रकाशन – वाराणसी, (उ.प्र.)

7- चारुदत्त –अंक -3, चौखंभा प्रकाशन – वाराणसी, (उ.प्र.)

8- प्रतिमानाटक – अंक- 6, चौखंभा प्रकाशन – वाराणसी, (उ.प्र.)